लीलाधर जगूड़ी के काव्य में राजनीतिक छद्म

डॉ. आर.पी. वर्मा,
एसो. प्रो. एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय गोसाईखेड़ा,
जनपद–उन्नाव, उ.प्र.

समकालीन कवियों ने समय की नब्ज के साथ–साथ उसकी गंध और मानवीय वेतन को न केवल नयी अर्थवत्ता प्रदान की अपितु उसे विविध रूपों में भी रूपायित किया है। यह समकालीन कविता की सबसे बड़ी खूबी कही जा सकती है। कविता ही वह टूल्स है जो कवि के भाषायी शब्दों को अपने अनुभवगत सच्चाई से उद्घाटित करता चलता है। कविता की सौन्दर्यवत्ता को किसी सीमा में बांधकर नहीं रखा जा सकता है, और न ही सीमित करने का प्रयास करना चाहिए। कविता के जनोन्मुखी दृष्टि पर विचार करते हुए। डा0 ए0 अरविन्दाक्षन ने संकेत किया है–समकालीन कविता की समकालीनता पर विचार करते समय जब हम इस तथ्य पर विचार करते हैं कि कविता की जनोन्मुखी दृष्टि ही कविता की असलियत है तो यह प्रश्न उठ सकता है कि जिस बृहतर यथार्थ और उसके प्रतिबिम्बात्मक सच की बात हो रही है, क्या वह कविता की असलियत के विरूद्व तो नहीं? कविता की असलियत मात्र उसकी कलावादी चेतना से संम्बद्ध नहीं है। कविता लिखने में उपलब्ध है। पर कविता लिखने में निहित या उसमें लीन नैसर्गिक शक्ति में सांस्कृतिक उष्मा की तमाम चेतनाएं वर्तमान हैं। अगर ये सब अवचेतन से संबंधित हैं तो वही अवचेतन कविता लेखन के स्तर पर चेतन का प्रकटीकरण है। कविता की चौनिन्द सत्ता में चेतन और अवचेतन का सम्मिश्रण तो रहता ही है। वह अलग–अलग खानों में बंटकर नहीं रहता। ऐसा भी कहा जा सकता है कि कवि का कोई विशेष पक्ष नहीं बल्कि कवि पूर्ण रूप से कविता लेखन में संलग्न होता है। अतः कविता की सौदर्य–चेतना में फूल की सुगन्ध और उसका मुख्य केन्द्र बना हुआ मधुपक्ष प्रमुख है और उसके मुरझाने पर प्रस्फुटित रंगीन दर्दभरा विलाप मात्र नहीं है। उसकी सौन्दर्यवत्ता कोई सीमित एक नहीं है। उसके सौन्दर्य की प्राप्ति ग्रामीण अंचल में विचरण करते समय प्राप्त होनेवाला सौन्दर्य है। अर्थात् वह जनपथ, जिसके बाहर–भीतर अनेक पगडंडियाँ हैं जिनसे बाहर जाया जा सकता है भीतर प्रवेश किया जा सकता है। उसी प्रकार कविता की केन्द्रीय दृष्टि एकमार्गी नहीं बहुमार्गी है। कविता और उसकी समकालीनता की यही सत्तातम स्थिति है।"

समकालीनता को प्रायः लोग समय के अनुरुप विशिष्ट प्रवृत्ति के आधार परन देखकर या न मानकर उसकी संपृक्ति और सहज अभिव्यक्ति की कसौटी पर देखें–परखें तो मुझे लगता है। समकालीन कवियों की कविताओं में जनजीवन के गहरे अर्थ और गंध प्रस्फुटित होंगे।

यही नहीं समकालीन कवियों ने वर्तमान सामाजिक राजनीतिक स्थितियों में हो रहे बदलाव के साथ–साथ शेषण की विविधताओं पर भी जमकर प्रहार किया है। इन कवियों की कविताएं एक तरह से उनसे संघर्षरत सहने की ताकत और उर्जा भी देती हैं। समकालीनता को लेकर विद्वानों में कई बार एक मत देखने को नहीं मिलता है। समकालीन बोध को रेखांकित करते हुए डॉ. रामकली सराफ की मान्यता हे कि–"समकालीनता के बारे में यथार्थ–परक और

यर्थाथ–विरोधी दृष्टियों के टकराव की वजह से ही समकालीन कविता के चरित्र के बारे में अलग–अलग दावे किए जाते हैं। समकालीन हिन्दी कविता में आधुनिकतावाद और उत्तर–आधुनिकतावाद के रुप में कलावाद का पुनर्जन्म पूँजीवादी और साम्राजवादी संस्कृति के चरित्र पर पर्दा डालने की कोशिश में हुआ। यह आश्चर्य की बात नही है कि 'कविता की वापसी' के नाम पर कलावाद के प्रवक्ता अशोक वाजपेयी ने समकालीन कविता के चरित्र को परिभाषित करते हुए उसे "तथाकथित जनवाद और तथाकथित कलावाद के बीच द्वन्द्व" कहा है।

अपने कला वाद को अस्वीकार करने के उद्देश्य से उन्होंने उसे तथाकथित अर्थात विरोधियों द्वारा लगाया गया आरोप माना है। उसी तरह इस कलावाद के जनवाद विरोधी चरित्र को छिपाने के लिए उन्होनें कलावाद के विरोधियों के जनवाद को तथाकथित कहा है। इस तरह उनका दावा है कि "कविता को वापसी के नाम पर न तो जनतांत्रिक मूल्यों का विरोध कर रहे थे और न कलावाद को प्रश्रम दे रहे थे।"

समकालीन कवियों में लीलाधर जगूड़ी ऐसे कवि हैं जिन्होंने अपनी रचना दुष्टि से स्वांतंत्र्योत्तर राजनीतिक ओश्र सामाजिक परिदृश्यों में आए परिवतनों को बड़े ही सहज और बेबाक शैली में अभिवयक्त किया है। कवि लीलाधर जगूड़ी ने राजनीतिज्ञों के अन्तर्विरोधी रवैए व दोगलेपन को बखूबी बेनाकब किया है। इस यात्रा में कविता में देखा जा सकता है–

हम सब कुछ बदलकर रख देंगे
उसके बाद भी अगर कोर्द भूख की बातें करें।
ते सह प्रधानमंत्री को सहन नहीं होगा।
सब कुछ तैयार सड़कें, घर, कपड़े, पौष्टिक,
आहार,
देखने के लिए मधुर सपने।

'अब इतने दिनों बाद' कविता के कवि बुराइयों और अच्छाइयों पर प्रश्न–चिह्न लगाते हुए कहता हैकि बुराई पर अच्छाई की जीत दिखलाते–दिखलाते दुःख और बढ़ता चला जा रहा है। बुराई बढ़ती चली जा रही है, वहीं अच्छाई घटती जा रही है।

'ओह! कितना दम है बुराइयों में कितनी कमजोर है अच्छाइयाँ बस एकमात्र आदर्श यह नजर आता है :

कि कमजोर का पक्ष लो
हम आदर्श वाक्य से पता लगता है।
कितना कमजोर हो गया है कमजोर का पक्ष।

कवि लीलाधर जगूड़ी ने राजनेताओं और गिरते राजनीतिक स्तर को अपनी कविताओं के माध्यम से उद्घाटित किया है। इन नेताओं का जब असली रुप जनता के सामने आता है तब इनकी वास्तविकता लोंगों के सामने आती है। खुलेआम हो रही हत्याएँ हमारी इस समाज व्यवस्था पर करारा प्रहार करती है। इस सच्चाई को हत्यारा कविता में देखा जा सकता है–

हत्यारे का पाँव घायल मगर जूता लोहे का
हत्यारे के पास करने को हैं कई वारदातें, कई
दुर्घटनाएँ
देने का हैं कई जलूस कई समारोह
कई व्यवस्था–विरोध और शोक–सभाएँ
मगर अब तो वह विचार भी देने जगा है
पहले विचार की हत्या के साथ।

समय कितनी तेजी से बदल रहा है इसका अंदाजा आस–पास के परिवेश में हो रहे बदलाव से भी सहज लगाया जा सकता है। जिंदगी एक भिड़त के समान हो गई है। आज आपसी और पारिवारिक संबंधों को लोग भुनाने में लगा गए हैं। प्रश्न उठता है कि क्या मरने के पहले ही

सारे संबंधों को भुना लेना चाहता है। 'मरने से पहले' कविता में इस टीस को देखा जा सकता है–

वह समय जा रहा था जो हाथ नहीं आ रहा था
इसलिए एक चीज हाथ में ली और दूसरी चीज से भिड़ा दी
आवाज आई जिंदगी एक भिड़ंत है।
इस क्षण के बाद खड़े क्षण के आते ही जो क्षण आएगा।
इस दिन के बाद खड़े दिन के आते ही जो दिन आएगा
इस व्यक्ति के बाद खड़े व्यक्ति के आते ही जो व्यक्ति आएगा
उसे भी अतीत में जोड़ दिया जाएगा।

भारत के राजनीतिक हालात से कवि काफी रुष्ट और क्षुब्ध है। पूँजीपति जहाँ ऐशो–आराम की जिंदगी व्यतीत कर रहा है वहीं आम जनता दो वक्त की रोटी के लिए ललायित है। कवि ऐसी व्यवस्था को मिटा देना चाहता है। इन नेताओं को आम जनता के भविष्य से कहीं ज्यादा अपने भविष्य को उज्जवल बनाने में व्यस्त है। इसी सच्चाई को उरेहते हुए कवि कहता है–

पराजय और विनाश के बीच।
आदर्श एक चलाकी है।
लूटने के अनुशासन में पुलिस की तरह । सबकी वर्दी खाकी है।
भारत एक वर्ष है स्वतंत्र एक दल है
सेवक कार पर। और जन पैदल।

राजनेताओं के रवैये से जनता का न केवल शोषण हो रहा है अपितु सत्ताधारियों की कुटिलता और अवसरवादी रवैये से, आम जनता को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। देश के नेताओं के दोहरे चरित्र और मिथ्या आश्वासनों के चलते ही आज देश इस विकट स्थिति में पहुँच गया है। इसीलिए इनके प्रति उनके मन विद्रोह और आक्रोश पैदा होता है। वहां छिपना बेकार है जिसमें से बाहर न आया जा सके। आखिर यह मिट्टी नहीं होने देती। वहाँ जरुर कोई कोई दिशा है कविता में इसी पीड़ा और दंश को यथार्थ रुप में देखा जा सकता है–

यह पृथ्वी किसकी है?
यह पृथ्वी उनकी है जो इसे खोदते हैं, टूटने से बचाते हैं
इसके बिगड़ैलपन को सँवारते हैं?
जो कुर्सियाँ बनाते हैं और
टप्प से दूसरों के नीचे लगा देते हैं पृथ्वी उनकी है
जो इसकी एक–एक करतूत और एक–एक आहट के साथ
इसे समूची जानते हैं।

इस प्रकार लीलाधर जगूड़ी की कविताओं में अनुभव के साथ–साथ भाषा की अद्वितीयता का सार्थक रुप दृष्टिगोचर होता है। राजनीतिक चेतना का यथार्थ चित्रण इनकी 'शंखमुखी शिखरों पर मारक जारी है,' 'इस यात्रा में', 'रात अब भी मौजूद है', 'बची हुई पृथ्वी', 'धबराए हुए शब्द', भय भी शक्ति देता है', 'अनुभव के आकाश में चाँद', 'महाकाव्य के बिना', ईश्वर की अध्यक्षता में', और अब 'खबर का मुँह विज्ञापन से ढका है'। सभी संग्रहों में देखी जा सकती है।

लीलाधर जगूड़ी की कविताओं की प्रखरता और पैनापन रचनाओं के पढ़ने के उपरोन्त ही जाना जा सकता है। यही नहीं कवि ने अपने भाषा के जरिए यह भी अभिव्यक्त अज़ैर प्रकट कर दिया है कि परंपरा के विकास में

आधुनिकता का और आधुनिकता के विकास में परंपरा का कितना हाथ है और होता है। अतः कहा जा सकता है कि लीलाधर जगूड़ी की किवताएँ सहज शिल्प के साथ हृदयगत अनुभूतियों और मानवीय मनोभावो को बेबाक ढंग से उद्घाटि किया है। इनकी कविताओं में मानव के दोनों अर्थात श्वेत–श्याम पक्ष सहजताः देखे जा सकते हैं यही कारण है कि लम्बे गहरे जीवनानुभूति ही क्षण और वस्तु को मानो नया शब्द–विन्यास दे रहे हो। निश्चित ही उनकी कविताएं भयावह समाज व मानवीय अस्तित्व से साक्षात्कार करती चलती हैं।

संदर्भ

- समकालीन हिन्दी कविता–डॉ. ए. अरविन्दाक्षन, पृ. 14
- समकालीन कविता की प्रवृत्तियां – डॉ. रामकली सर्राफ, पृ. 97
- इस यात्रा में, पृ. 78
- अब तक इतने दिनों बाद–लीलाधर जगूड़ी, पृ. 136
- हत्यारा–लीलाधर जगूड़ी, पृ. 139
- मरने से पहले– लीलाधर जगूड़ी, पृ. 141
- नाटक जारी है– लीलाधर जगूड़ी, पृ. 48
- कवि ने कहा– लीलाधर जगूड़ी
- लीलाधर जगूड़ी के काव्य में राजनीतिक छन्द, पृ. 143 से 147 तक
- समकालीन नेता के अर्थों में हिन्दी कविता–प्रो. सुखदेव सिंह मिन्हास, पृ. 147